FOUR YEAR UNDER GRADUATE COURSE (FYUG)
(According to National Education Policy - 2020)

Department of Hindi
North-Eastern Hill University, Shillong
Date of approval in Academic Council: 30.05.2024

भूमिका

प्रस्तुत पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के अनुरूप पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम संरचना के आलोक में भारतीय मूल्य परंपरा के अनुरूप उन्नत एवं समृद्ध राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध है। साहित्य शिक्षण के माध्यम से मानव मूल्यों के सृजन उसके विकास एवं विस्तार हेतु साहित्य का प्रयोग इस कार्यक्रम का अभिप्राय है। हिंदी साहित्य में प्रारंभ से ही उच्च मानव मूल्यों की निर्मिति एवं संचार की प्रवृत्ति पायी जाती है। आदिकालीन हिंदी साहित्य में जहाँ जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त एवं वैदिक ज्ञान परंपरा के निर्वहन की प्रवृत्ति दिखाई देती है वहीं लोकचेतना के समृद्ध एवं उर्जस्वित स्वरूप के दर्शन हमें साहित्य के विविध रूपों में परिलक्षित होते हैं। आदिकालीन थेरी गाथाओं में जहां स्त्री चिंतन की शक्ति दिखाई देती है वहीं जैन महापुराणों की परंपरा में भारत के प्राचीन आख्यानों की अनुश्रुति महसूस की जा सकती है। इसी प्रकार स्वर्णयुग में भक्ति परंपरा का विराट संभार परिलक्षित होता है। सगुण-निर्गुण, सूफी भक्ति परंपरा का लोक विस्तृत स्वरूप हिंदी साहित्य की अनमोल थाती है। ज्ञान और दर्शन का जो संयोग हिंदी साहित्य में प्राप्त होता है वही उसे वैश्विक स्वरूप प्रदान करता है।

रीतिकालीन साहित्य में जहाँ साहित्य की शास्त्रीय परंपरा का उन्मेष होता है वहीं आधुनिक कालीन साहित्य के माध्यम से वैश्विक स्तर पर समकालीन साहित्य बोध पैदा होता है। इसके माध्यम से जहाँ एक ओर हिंदी गद्य के विकास का विस्तृत परिप्रेक्ष्य निर्मित होता है वहीं वैश्विक स्तर पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन, विचारों के ग्रहण और चिंतन के क्षितिज के विस्तार का बोध होता है। अपने आधुनिक स्वरूप के निर्माण में हिंदी साहित्य स्वच्छंदतावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद सहित उत्तर आधुनिकता के विभिन्न पक्षों, उत्तर संरचनावाद, उत्तर उपनिवेशवाद आदि को ग्रहण करते हुए दार्शनिक चिंतन के नवीनतम विचारधाराओं जैसे स्त्री चिंतन, दलित चिंतन, आदिवासी चिंतन, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद आदि को अपने में समाहित करता है।

कार्यक्रम केंद्रित उपलब्धि

हिन्दी विषय में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को स्नातक की डिग्री प्रदान करना तो है ही साथ ही उन्हें संस्कारवान समाज के निर्माण के लिए तैयार करना भी है। इसके लिए दैनिक आचरण से लेकर समाज केंद्रित उन्नत व्यवहार की शिक्षा का उद्देश्य भी इस पाठ्यक्रम संरचना में शामिल है। साथ ही रोजगारों के सृजन एवं कौशल विकास के माध्यम से प्रत्येक युवा को समर्थ बनाना भी इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के विषय में नवीनतम शोध एवं ज्ञान के विस्तार का उद्देश्य भी पूरे कार्यक्रम की संरचना में केंद्रस्थ है। इसके साथ यह भी कहा जाता सकता है कि प्रत्येक युवा को राष्ट्र निर्माण की महती भूमिका में लगाना और उन्हें उन्नत समाज के निर्माण के प्रति जागृत करना भी इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

Four Year UG Course
Subject: Hindi, Paper Details (Major/ Minor Papers)

Year	Sem	Paper Code	Title of the Paper	Credit	Contact Hours	Marks
1st Year	1st Semester	HIN – 100 (Major/ Minor)	हिंदी भाषा एवं लिपि	4	60	100
		HIN – 120 (AEC)	हिंदी भाषा का अनुप्रयोग (व्यावहारिक दक्षता)	3	45	075
	2nd Semester	HIN – 150 (Major/ Minor)	हिंदी व्याकरण	4	60	100
		HIN – 170 (AEC)	हिंदी भाषा का अनुप्रयोग (तकनीकी दक्षता)	3	45	075
2nd Year	3rd Semester	HIN – 200(Major)	आदिकालीन हिंदी कविता	4	60	100
		HIN – 201(Major)	हिंदी नाटक एवं एकांकी	4	60	100
	4th Semester	HIN – 250(Major)	हिंदी निबंध	4	60	100
		HIN – 251(Major)	हिन्दी गद्य : विविध विधाएँ -1	4	60	100
		HIN – 252(Major)	भाषा विज्ञान	4	60	100
		HIN – 253(Major)	हिंदी आलोचना	4	60	100
3rd Year	5th Semester	HIN – 300(Major)	पूर्वोत्तर भारत का लोकसाहित्य	4	60	100
		HIN – 301(Major)	हिंदी पत्रकारिता	4	60	100
		HIN - 302 (Major)	मध्यकालीन कविता	4	60	100
		HIN - 302 (Minor)	मध्यकालीन कविता	4	60	100
	6th Semester	HIN – 350(Major)	हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल	4	60	100
		HIN – 351(Major)	प्रयोजनमूलक हिन्दी	4	60	100
		HIN – 352 (Major)	हिंदी गद्य : विविध विधाएँ -2	4	60	100
		HIN – 353(Major)	पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी भाषा और साहित्य	4	60	100
4th Year	7th Semester	HIN – 400(RM)	शोध प्रविधि	4	60	100
		HIN – 401(Major)	हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्यकाल तक)	4	60	100
		HIN – 402(Major)	भारतीय काव्यशास्त्र	4	60	100
		HIN – 403(Major)	हिन्दी कथा साहित्य	4	60	100
		HIN – 404(Minor)	हिन्दी कथा साहित्य	4	60	100
	8th Semester	HIN – 450(Major)	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4	60	100
		HIN – 451(Minor)	आधुनिक हिन्दी कविता	4	60	100
		HIN– 452*(RP)	परियोजना कार्य/ लघु शोध प्रबंध, अथवा	12	180	300
		HIN– 453*(Major/Adv)	आधुनिक भारतीय साहित्य	4	60	100
		HIN– 454*(Major/Adv)	हिन्दी साहित्य की वैचारिकी	4	60	100
		HIN– 455*(Major/Adv)	अनुवाद: सिद्धांत एवं व्यवहार	4	60	100

*** जो विद्यार्थी सप्तम सत्र तक समग्रत: 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेंगे उन्हें ही परियोजना कार्य हेतु अर्हता प्राप्त होगी। परियोजना कार्य न करने वाले विद्यार्थियों को उसके स्थान पर तीन पत्रों (HIN-453, HIN-454 एवं HIN-455) का अध्ययन करना होगा।**

स्नातक पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष – प्रथम सत्र - प्रथम पत्र

(Major/ Paper)

HIN-100 **हिंदी भाषा एवं लिपि** **क्रेडिट– 4/अंक-100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी भाषा और लिपि के उद्भव और विकास से अवगत कराना है।

उपलब्धि :

- इस पत्र का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थीगण हिंदी भाषा एवं लिपि की उत्पति के बारे में जानेंगे।
- हिंदी भाषा और नागरी लिपि के विकास के विभिन्न पक्षों से अवगत होंगे।
- आधुनिक भारतीय भाषाओं, हिंदी की प्रमुख बोलियों और पूर्वोत्तर की भाषाओं के अंर्तसंबंधों को जानेंगे।

इकाई 1 भाषा : परिभाषा एवं विशेषताएँ, भाषा के विविध रूप, भाषा के विविध पक्ष, राष्ट्रीय एकात्मकता में भाषा की भूमिका

इकाई 2 हिंदी भाषा का विकास : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ, मध्यकालीन आर्य भाषाएँ।

इकाई 3 आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ : हिंदी की प्रमुख बोलियाँ, पूर्वोत्तर की भाषाओं से अंर्तसंबंध

इकाई 4 नागरी लिपि : उद्भव एवं विकास, मानकीकरण, गुण-दोष एवं सुधार के उपाय

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी – अनंतलाल चौधरी, बिहार ग्रंथ अकादमी पटणा
2. भारतीय आर्य भाषा और हिंदी – सुनित कुमार चटर्जी, राजकनल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि – धीरेंद्र वर्मी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
4. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. भाषा विवेचन – भगीरथ मिश्र, साहित्य भवन, इलाहाबाद
6. भाषा शास्त्र की रूपरेखा - उदयनारायण तिवारी, भारतीय भंडार, इलाहाबाद
7. सामान्य भाषा विज्ञान – बाबुराम सस्केना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

स्नातक पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष – प्रथम सत्र - योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम (AEC)

HIN-120 हिंदी भाषा का अनुप्रयोग (व्यवहारिक दक्षता) क्रेडिट– 3/अंक-75

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के प्रयोग की व्यावहारिक दक्षता प्रदान करना है।

उपलब्धि :

- इस पत्र का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थीगण हिंदी वर्णमाला, उसके उच्चारण के विविध पक्षों एवं तरीकों से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी लेखन में वर्तनी संबंधित विविध पक्षों का परिचय मिलेगा।
- हिंदी में वार्तालाप करने और उसके विविध पक्षों का ज्ञान मिलेगा।

इकाई 1 हिंदी उच्चारण ज्ञान : वर्णमाला, अल्पप्राण, महाप्राण, अघोष, सघोष, कंठ, तालव्य, मूर्धन्य, ओष्ठ, दंत्य,दंतोष्ठ्य, अंतस्थ, उष्म।

इकाई 2 हिंदी वर्तनी ज्ञान : ह्रस्व, दीर्घ, स्वर, व्यंजन, मात्रा प्रयोग।

इकाई 3 संप्रेषण कला : संवाद/ वार्तालाप- औपचारिक, अनौपचारिक, लिखित संप्रेषण, अनौपचारिक पत्र-लेखन।

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी – अनंतलाल चौधरी, बिहार ग्रंथ अकादमी पटणा
2. भारतीय आर्य भाषा और हिंदी – सुनित कुमार चटर्जी, राजकनल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी भाषा और देवनागरी लिपी – धीरेंद्र वर्मी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
4. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. भाषा विवेचन – भगीरथ मिश्र, साहित्य भवन, इलाहाबाद
6. भाषा शास्त्र की रूपरेखा - उदयनारायण तिवारी, भारतीय भंडार, इलाहाबाद
7. सामान्य भाषा विज्ञान – बाबुराम सस्केना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 75 (सत्रांत परीक्षा - 60 और आभ्यंतर परीक्षा-15)

द्वितीय वर्ष –प्रथम सत्र - प्रथम पत्र

(Major/ Paper)

HIN-150 **हिंदी व्याकरण** **क्रेडिट– 4/अंक-100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी व्याकरण का सामान्य परिचय प्रदान करना है।

उपलब्धि :

- इस पत्र का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थीगण हिंदी संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, लिंग, वचन आदि के विविध पक्षों से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी व्याकरण के प्रत्यय, उपसर्ग, विशेषण, वर्ण, शब्द, पद आदि से परिचित हो सकेंगे।
- भाषा के विविध रूपों- राष्ट्रभाषा, राजभाषा, बोलचाल की भाषा आदि का परिचय प्राप्त होगा।

इकाई 1 हिंदी रूपरचना : हिंदी संज्ञा और उसके विविध भेद : सर्वनाम और उसके विविध भेद; क्रिया और उसके विविध भेद।

इकाई 2 लिंग की परिभाषा और उसके विविध भेद; वचन की परिभाषा और उसके विविध भेद; प्रत्यय एवं उपसर्ग की परिभाषा और उसका स्वरूप; हिंदी कारक।

इकाई 3 विशेषण और उसके भेद; भाषा के विविध अवयव-वर्ण,शब्द, पद, वाक्य, अर्थ।

इकाई 4 भाषा के विविध रूप: सामान्य हिंदी, परिनिष्ठित हिंदी, प्रयोजनमूलक हिंदी, राष्ट्रभाषा हिंदी, राजभाषा हिंदी।

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. हिंदी व्याकरण – कामताप्रसाद गुरू, नागरी प्रचारिणी सभा काशी
2. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. विजयपाल सिंग, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
4. प्रयोजनमूलक हिंदी – रविंद्रकुमार श्रीवास्तव, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
5. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत अवं प्रयोग – डॉ. दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाश, दिल्ली
6. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका – डॉ. कैलाशनाथ पांडे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. राजभाषा हिंदी, कैलाशचंद्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

स्नातक पाठ्यक्रम

द्वितीय वर्ष – द्वितीय सत्र- योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम (AEC)

HIN-170 **हिंदी भाषा का अनुप्रयोग (तकनीकी दक्षता)** **क्रेडिट– 3/अंक-75**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के प्रयोग से संबंधित कंम्प्यूटर की तकनीकी दक्षता प्रदान करना है।

उपलब्धि :

- इस पत्र का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थीगण हिंदी लेखन संबंधी एम.एस.वर्ड का तकनीकी ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- हिंदी लेखन संबंधी इंटरनेट की सुविधाओं का तकनीकी ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- हिंदी लेखन संबंधी विभिन्न ई-सामग्रियों का परिचय मिलेगा।

इकाई 1 एम.एस. वर्ड : परिचय एवं प्रयोग

इकाई 2 इंटरनेट : परिचय, विकास एवं प्रयोग, हिंदी फाँण्ट, गुगल हिंदी फाँण्ट, मौखिक भाषा लिप्याकंन, हस्तलेख लिप्याकंन।

इकाई 3 ई-सामग्री : परिचय एवं प्रयोग, ई-पुस्तक, ई-पत्रिका, ई-पुस्तकालय।

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी – अनंतलाल चौधरी, बिहार ग्रंथ अकादमी पटणा
2. भारतीय आर्य भाषा और हिंदी – सुनित कुमार चटर्जी, राजकनल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि – धीरेंद्र वर्मा, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
4. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. भाषा विवेचन – भगीरथ मिश्र, साहित्य भवन, इलाहाबाद
6. भाषा शास्त्र की रूपरेखा - उदयनारायण तिवारी, भारतीय भंडार, इलाहाबाद
7. सामान्य भाषा विज्ञान – बाबुराम सस्केना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 75 (सत्रांत परीक्षा - 60 और आभ्यंतर परीक्षा-15)

स्नातक पाठ्यक्रम

द्वितीय वर्ष -तृतीय सत्र-प्रथम पत्र

(Major Paper)

HIN-200 **आदिकालीन हिंदी कविता** **क्रेडिट– 4/अंक-100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के आदिकालीन कवियों के योगदान से अवगत कराना है।

उपलब्धि :

- इस पत्र का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थीगण सरहपा, गोरखनाथ, चंदबरदाई, विद्यापति तथा अमीर खुसरो की रचनाओं का परिचय मिलेगा।
- आदिकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों को समझ सकेंगे।
- आदिकालीन कवियों के हिंदी साहित्य में योगदान से परिचित हो सकेंगे।

इकाई 1 क. सरहपा- दोहाकोश – 2, 3, 6, 9
ख. गोरखनाथ – 7, 18, 19, 20

इकाई 2 चंदबरदाई - पद्मावती समय – प्रारंभिक सात छंद

इकाई 3 विद्यापति- पदावली – 1 एवं 2, वंशी माधुरी -3, रूप वर्णन -4

इकाई 4 अमीर खुसरो- पहेलियाँ- 1, 10, 34, 48, 53; मुकरियाँ- 145, 150, 153, 161, 164

पाठ्य पुस्तकें – 1. आदिकालीन काव्य- सं. डॉ. वासुदेव सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. खुसरो की हिंदी कविता- ब्रजरत्नदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

अभिस्तावित पुस्तकें –

3. सिद्ध सरहपा- डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
4. विद्यापति काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन- डॉ. अमूल्य चंद्र बर्मन, असम हिंदी प्रकाशन, गुवाहाटी
3. विद्यापति – शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. आदिकालीन और मध्यकालीन कवियों का आलोचनात्मक पाठ – हेमंत कुकरेती, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

द्वितीय वर्ष -तृतीय सत्र- द्वितीय पत्र

(Major Paper)

HIN-201 **हिंदी नाटक एवं एकांकी** **क्रेडिट– 4/ अंक- 100**

उद्देश्य :

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के प्रमुख नाटकों एवं एकांकी का ज्ञान देना है।

उपलब्धि :

- इस पत्र के अध्ययन करने से विद्याथियों को नाटक एवं एकांकी के उद्भव विकास एवं उसके तत्त्वों का परिचय प्राप्त होगा।
- प्रमुख नाटकारों जैसे भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, रामकुमार वर्मा आदि की रचनाओं का ज्ञान मिलेगा।
- तत्कालीन समय एवं समाज की जानकारी प्राप्त होगी।

इकाई 1 नाटक एवं एकांकी के तत्त्व, हिंदी नाटक का उद्भव एवं विकास, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, नाटक और एकांकी साम्य-वैषम्य

इकाई 2 भारत दुर्दशा – भारतेंदु हरिश्चंद्र

इकाई 3 ध्रुवस्वामिनी – जयशंकर प्रसाद

इकाई 4 एकांकी - सीमारेखा (विष्णु प्रभाकर), चंपक (रामकुमार वर्मा), भोर का तारा (जगदीशचंद्र माथुर), बहू की विदा (विनोद रस्तोगी)

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिंदी नाटक का उद्भव और विकास, डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड संस प्रकाशन, दिल्ली
2. हिंदी नाटक- डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच- सं. नेमीचन्द्र जैन, मैकमिलन प्रकाशन,नई दिल्ली
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र का रचना-संसार: एक पुनर्मूल्यांकन- डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव, साहित्य रत्नाकर, कानपुर
5. नाटककार भारतेंदु की रंग-परिकल्पना- सत्येंद्र तनेजा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. हिंदी एकांकी- सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

द्वितीय वर्ष - चतुर्थ सत्र-प्रथम पत्र

(Major Paper)

HIN-250 **हिंदी निबंध** **क्रेडिट – 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी के प्रमुख निबंधकारो एवं उनके निबंधों का ज्ञान देना है।

उपलब्धि :

- इसके अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकारों के निबंधों का अध्ययन कर सकेंगे।
- देश, समाज, संस्कृति को बहुत गहराई से समझेंगे।
- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में उच्च जीवन-मूल्यों का विकास होगा।

इकाई 1 साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है (बालकृष्ण भट्ट), कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता (महावीर प्रसाद द्विवेदी), कछुआ धरम (चंद्रधर शर्मा गुलेरी)

इकाई 2 उत्साह (आ. रामचंद्र शुक्ल), गेहूँ बनाम गुलाब (रामवृक्ष बेनीपुरी), अशोक के फूल (हजारीप्रसाद द्विवेदी)

इकाई 3 श्रृंखला की कड़ियाँ (महादेवी वर्मा), चेतना का संस्कार (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'), सदाचार का ताबीज (हरिशंकर परसाई)

इकाई 4 मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र), व्यापकता की गहराई (नामवर सिंह), चंद्र मादन (शिवप्रसाद सिंह)

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिंदी गद्य: विन्यास और विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार- राजकिशोर सिंह, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ
3. ललित निबंध- केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
4. साहित्यिक निबंध- गणपतिचंद्र गुप्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. साहित्यिक निबंध- सं. त्रिभुवन सिंह, विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. हिंदी निबंध और निबंधकार- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

द्वितीय वर्ष - चतुर्थ सत्र-द्वितीय पत्र

(Major Paper)

HIN-251 **हिन्दी गद्य: विविध विधाएँ - 1** **क्रेडिट – 4/अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य हिंदी के विविध विधाओं का परिचय देना है। इसके साथ ही गद्यकाकारों की रचनाओं का भी परिचय दिया जायेगा।

उपलब्धि:

- इसके अध्ययन से विद्यार्थीगण कथेतर लेखन-शैली से अवगत होंगे।
- हिंदी के प्रमुख गद्यकारों से परिचित होंगे।
- हिंदी के कथेतर गद्य का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई 1 जीवनी: आवारा मसीहा (विष्णु प्रभाकर):प्रारम्भिक पचास पृष्ठ

इकाई 2 संस्मरण: मैं आगे का जय-जयकार (माखनलाल चतुर्वेदी),हजारीप्रसाद द्विवेदी (बनारसीदास चतुर्वेदी)

इकाई 3 रेखाचित्र:गौरा (महादेवी वर्मा),चीड़ों पर चाँदनी (निर्मल वर्मा)

इकाई 4 पत्र साहित्य:नेमिचन्द्र जैन के नाम पत्र : एक से दस (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन'अज्ञेय')

पाठ्य पुस्तक – गद्य सौरभ (संपादक- डॉ. नागरत्ना एन. राव) राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली
अंधेर नगरी (भारतेन्दु हरिश्चंद्र), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. गद्य की नयी विधाओं का विकास- मज़दा असाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी गद्य: विन्यास और विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिंदी का गद्य साहित्य- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. हिंदी के श्रेष्ठ रेखाचित्र- सं. डॉ. चौथीराम यादव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. छायावादोत्तर हिंदी गद्य साहित्य –विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. आधुनिक हिंदी गद्य का साहित्य- हरदयाल, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
7. अज्ञेय पत्रावली- सं.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साहित्य अकादमी,नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

द्वितीय वर्ष - चतुर्थ सत्र- तृतीय पत्र

(Major Paper)

HIN-252 **भाषा विज्ञान** **क्रेडिट – 4/अंक- 100**

उद्देश्य :

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भाषा विज्ञान की सामान्य जानकारी देना है।

उपलब्धि :

- इसके अध्ययन से विद्यार्थीगण भाषा प्रयोग में वैज्ञानिकता का निर्वहन कर सकेंगे।
- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी दूसरी भाषाओं के प्रयोग को भी समझ सकेंगे।
- भारतीय भाषा परिवार, ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान संबंधी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई 1 भाषाविज्ञान : परिभाषा, विशेषताएँ, क्षेत्र, अध्ययन पद्धतियाँ, अध्ययन से लाभ

इकाई 2 भाषा परिवार : सामान्य परिचय, वर्गीकरण, भारोपीय परिवार की विशेषताएँ, भारतीय भाषा परिवार

इकाई 3 ध्वनि विज्ञान एवं रूप विज्ञान: सामान्य परिचय, ध्वनि एवं रूप परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ

इकाई 4 वाक्य विज्ञान एवं अर्थ विज्ञान : सामान्य परिचय, वाक्य एवं अर्थ परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. भाषाविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
2. भाषा विज्ञान की भूमिका- आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा, अनुपम प्रकाशन, पटना
3. हिंदी भाषा का इतिहास- डॉ. धीरेंद्र वर्मा, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
4. हिंदी भाषा- भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद
5. सामान्य भाषाविज्ञान- डॉ. बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
6. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
7. भाषा शास्त्र तथा हिंदी भाषा की रूपरेखा- देवेंद्र कुमार शास्त्री, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. भाषा एवं भाषा विज्ञान- हनुमान प्रसाद शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. भाषा विज्ञान: हिंदी भाषा और लिपि- रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

द्वितीय वर्ष - चतुर्थ सत्र-चतुर्थ पत्र

(Major Paper)

HIN-253 **हिंदी आलोचना** **क्रेडिट-4/ अंक-100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को साहित्य संबंधी हिंदी आलोचना का ज्ञान देना है। इसके अंतर्गत हिंदी आलोचना के उद्भव एवं विकास के अतिरिक्त प्रमुख युगों का परिचय दिया जायेगा।

उपलब्धि**:**

- विद्यार्थियों को भारतेंदु युगीन, द्विवेदीयुगीन, शुक्लयुगीन एवं शुक्लोत्तरयुगीन आलोचना की विभिन्न पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- हिंदी आलोचना के क्रमिक विकास का ज्ञान होगा।
- प्रमुख आलोचकों के अवदान से परिचित होंगे।

इकाई 1 हिंदी आलोचना: उद्भव एवं विकास, आलोचना के विविध रूप

इकाई 2 भारतेंदु एवं द्विवेदीयुगीन हिंदी आलोचना

इकाई 3 शुक्लयुगीन हिंदी आलोचना – आ. रामचंद्र शुक्ल, बाबू गुलाबराय, बाबू श्यामसुंदर दास

इकाई 4 शुक्लोत्तर हिंदी आलोचना – आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. हिंदी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार– रामचंद्र तिवारी – विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिंदी आलोचना : अतीत और वर्तमान- प्रभाकर माचवे, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना-डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. आधुनिक हिंदी आलोचना के बीजशब्द – बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन
6. हिंदी आलोचना : दृष्टि और प्रवृत्तियाँ – मनोज पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. आलोचक का दायित्व – डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

तृतीय वर्ष - पंचम सत्र-प्रथम पत्र

(Major Paper)

HIN-300 **पूर्वोत्तर भारत का लोकसाहित्य** **क्रेडिट- 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र में पूर्वोत्तर भारत के लोकसाहित्य का ज्ञान देना है। इसके अंतर्गत पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषआओं के लोकसाहित्य का अध्ययन अपेक्षित होगा।

उपलब्धि:

- इस अध्ययन से विद्यार्थीगण पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषाओं जैसे खासी, काकबरक, मिजो, न्यिशी, बोरो आदि की लोककथाओं का अध्ययन करेंगे।
- पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषाओं के लोकगीतों का ज्ञान मिलेगा।
- पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषाओं की लोक सुभाषित का ज्ञान मिलेगा।

इकाई 1 पूर्वोत्तर भारत का लोक साहित्य : लोक साहित्य का अर्थ, अवधारणा, मौखिक परंपरा, विविध विधाएँ

इकाई 2 पूर्वोत्तर भारत की लोककथाएँ:मांडाल डारे की कथा (गारो), उ क्लव (खासी), राइमा और साइमा (कॉकबरक), कछुए और बंदर की दोस्ती (मिज़ो), नीमा निया (न्यिशी), मनुष्य क्यों मरते हैं? (बोरो)

इकाई 3 पूर्वोत्तर भारत के लोकगीत: जूरपि गीत, पशु-पक्षी संबंधी गीत (न्यिशी), श्रम गीत, विदाई गीत (कॉकबरक), बिहू गीत, संस्कार गीत (असमिया), लोरी गीत (मणिपुरी)

इकाई 4 पूर्वोत्तर भारत के लोक सुभाषित- कॉकबरक, न्यिशी, असमिया, मणिपुरी, बोरो

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. मेघालय की लोककथाएँ- माधवेंद्र, श्रुति, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली
2. खासी लोककथाएँ- डॉ. फिल्मेका मारबानियांग, अमन प्रकाशन, कानपुर
3. नागालैण्ड की लोककथाएँ- माधवेंद्र, श्रुति, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली
4. कॉकबरक लोक साहित्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
5. न्यिशी लोक साहित्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
6. बोरो लोक साहित्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
7. लोक साहित्य की भूमिका- कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद
8. लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग- डॉ. श्रीराम शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
9. मिजो लोक साहित्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

तृतीय वर्ष -पंचम सत्र- द्वितीय पत्र

(Major Paper)

HIN-301	**हिंदी पत्रकारिता**	**क्रेडिट- 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव और एवं विकास के साथ-साथ उसके विविध पक्षों का ज्ञान देने के साथ ही पत्रकारिता के क्षेत्र में विद्यार्थियों को रोजगार के लिए तैयार करना भी है।

उपलब्धि :

- हिंदी पत्रकारिता के उद्भव और विकास का बोध प्राप्त होगा।
- पत्रकारिता की विविध प्रक्रियाओं का ज्ञान मिलेगा।
- मीडिया लेखन के विविध पक्षों का ज्ञान मिलेगा।
- मीडिया में सृजनात्मक लेखन के तत्वों से परिचित हो सकेंगे।

इकाई 1 पत्रकारिता: अर्थ एवं परिभाषा, उद्भव एवं विकास,समाचार संकलन, लेखन एवं संपादन, शीर्षक, संवाददाता के कार्य

इकाई 2 सम्पादन प्रक्रिया एवं साजसज्जा: अवधारणा, उद्देश्य, तत्त्व, समाचार-मूल्यांकन एवं सम्पादन, प्रूफरीडिंग, साजसज्जा-गुण एवं दोष

इकाई 3 मीडिया लेखन: समाचार लेखन, अनुवर्तन समाचार लेखन, स्तंभ लेखन, संपादकीय लेखन

इकाई 4 सर्जनात्मक लेखन: कार्टून लेखन, साक्षात्कार, फीचर लेखन, पुस्तक समीक्षा

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास- जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी पत्रकारिता- कृष्णबिहारी मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. पत्रकारिता: परिवेश और प्रवृत्तियाँ – पृथ्वीनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. पत्रकारिता के नए आयाम- एस. के. दुबे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श –कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. हिंदी पत्रकारिता का प्रतिनिधि संकलन- तरुशिखा सुरजन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. पत्रकारिता: विधाएँ वित्त एवं संभावनाएँ- डॉ. मधुसूदन त्रिपाठी, गणपति प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

तृतीय वर्ष - पंचम सत्र- तृतीय पत्र

(Major Paper)

HIN-302 **मध्यकालीन कविता** **क्रेडिट–4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भक्तिकाल के प्रतिनिधि रचनाकारों का परिचय देना है। इसके साथ ही राम भक्तिधारा, कृष्ण भक्तिधारा, निर्गुण भक्ति एवं सूफी भक्ति की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय देना भी अभिप्रेत है।

उपलब्धि :

- इस पत्र के माध्यम से निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवियों की रचनाओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- सूफी साहित्य, साहित्यकार एवं उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- रीतिकाल की विभिन्न धाराओं का परिचय मिलेगा।
- रीतिकाल के प्रमुख रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं के अध्ययन का अवसर मिलेगा।

इकाई 1	अ.	कबीर: कबीर ग्रंथावली – सं.डॉ. श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (पाठ्य अंश - साखी- गुरुदेव को अंग, पद- 1, 2, 3, 11, 16, 20, 25, 33)
	ब.	जायसी: जायसी ग्रंथावली- सं.आ. रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (पाठ्य अंश - नागमती वियोग खंड: प्रारम्भ से दस दोहों तक)
इकाई 2	अ.	सूरदास : भ्रमरगीतसार- सं. आ. रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (पाठ्य अंश: पद सं. 23, 25, 34, 38, 41, 45, 50, 56)
	ब.	गोस्वामी तुलसी दास: रामचरितमानस- गीता प्रेस, गोरखपुर (पाठ्य अंश : उत्तरकाण्ड से दोहा-चौपाई 117 से 124 तक)
इकाई 3	अ.	केशवदास- रामचंद्रिका से 'वनमार्ग में राम'
	ब.	बिहारी: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी (पाठ्य अंश : दोहा सं 1, 3,7, 10, 15, 21, 25, 32, 34, 36)
इकाई 4	अ.	मतिराम: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी (पाठ्य अंश : पद सं 1, 3, 6, 9, 12)
	ब.	घनानंद : रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी। (पाठ्य अंश : प्रारंभ से 05 पद)

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. कबीर- डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई
2. कबीर मीमांसा – डॉ. रामचंद्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. त्रिवेणी- आ. रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. सूर और उनका साहित्य- डॉ. हरबंश लाल शर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
5. जायसी- विजय देव नारायण साही,हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

तृतीय वर्ष - पंचम सत्र

(Minor Paper)

HIN-302 **मध्यकालीन कविता** **क्रेडिट–4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भक्तिकाल के प्रतिनिधि रचनाकारों का परिचय देना है। इसके साथ ही राम भक्तिधारा, कृष्ण भक्तिधारा, निर्गुण भक्ति एवं सूफी भक्ति की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय देना भी अभिप्रेत है।

उपलब्धि :

- इस पत्र के माध्यम से निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवियों की रचनाओं का अध्ययन कर सकेंगे।
- सूफी साहित्य, साहित्यकार एवं उनकी रचनाओं का ज्ञान प्राप्त होगा।
- रीतिकाल की विभिन्न धाराओं का परिचय मिलेगा।
- रीतिकाल के प्रमुख रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं के अध्ययन का अवसर मिलेगा।

इकाई 1	अ.	कबीर: कबीर ग्रंथावली – सं.डॉ. श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (पाठ्य अंश - साखी- गुरुदेव को अंग, पद- 1, 2, 3, 11, 16, 20, 25, 33)
	ब.	जायसी: जायसी ग्रंथावली- सं.आ. रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (पाठ्य अंश - नागमती वियोग खंड: प्रारम्भ से दस दोहों तक)
इकाई 2	अ.	सूरदास : भ्रमरगीतसार- सं. आ. रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (पाठ्य अंश: पद सं. 23, 25, 34, 38, 41, 45, 50, 56)
	ब.	गोस्वामी तुलसी दास: रामचरितमानस- गीता प्रेस, गोरखपुर (पाठ्य अंश : उत्तरकाण्ड से दोहा-चौपाई 117 से 124 तक)
इकाई 3	अ.	केशवदास- रामचंद्रिका से 'वनमार्ग में राम'
	ब.	बिहारी: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी (पाठ्य अंश : दोहा सं 1, 3,7, 10, 15, 21, 25, 32, 34, 36)
इकाई 4	अ.	मतिराम: रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी (पाठ्य अंश : पद सं 1, 3, 6, 9, 12)
	ब.	घनानंद : रीतिकाव्य धारा- सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी। (पाठ्य अंश : प्रारंभ से 05 पद)

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. कबीर- डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई
2. कबीर मीमांसा – डॉ. रामचंद्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. त्रिवेणी- आ. रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. सूर और उनका साहित्य- डॉ. हरबंश लाल शर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
5. जायसी- विजय देव नारायण साही,हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

तृतीय वर्ष -षष्ठ सत्र - प्रथम पत्र

(Major Paper)

HIN-350 **हिंदी साहित्य का आधुनिक काल** **क्रेडिट– 4/अंक – 100**

उद्देश्य: इस पत्र के माध्यम से हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का परिचय प्रदान किया जाएगा। इसके अंतर्गत विभिन्न कालों के विभाजन, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख रचनाकारों का परिचय दिया जायेगा।

उपलब्धि:

- आधुनिक काल के हिंदी साहित्य की विकास यात्रा संबंधित ज्ञान देना है।
- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को आधुनिक काल का सामान्य परिचय प्राप्त होगा।
- इस काल के साहित्यिक विकास से भी अवगत होंगे।
- हिंदी गद्य की विविध विधाओं एवं उनके रचनाकारों का परिचय मिलेगा।

इकाई 1 आधुनिक काल: परिस्थितियाँ,हिंदी गद्य का विकास; हिंदी नवजागरण; सामाजिक संस्थाएं, पत्रकारिता, फोर्ट विलियम कॉलेज एवं ईसाई मिशनरियों की भूमिका

इकाई 2 आधुनिककाव्य के विविध सोपान: भारतेंदु युग,द्विवेदी युग,छायावाद,प्रगतिवाद,प्रयोगवाद, नई कविता,समकालीन कविता: परिचय एवं प्रवृत्तियाँ

इकाई 3 गद्य की विविध विधाएँ - एक : कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध एवं आलोचना

इकाई 4 गद्य की विविध विधाएँ - दो : जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत, रेखाचित्र एवं संस्मरण

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास- संपादक- डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का इतिहास- लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास – भगीरथ मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

तृतीय वर्ष -षष्ठ सत्र - द्वितीय पत्र

(Major Paper)

HIN-351 **प्रयोजनमूलक हिन्दी** **क्रेडिट-4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य हिंदी भाषा के विविध रूपों, उसकी अलग-अलग भूमिकाओं जैसे परिनिष्ठित हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी, व्यावसायिक हिन्दी आदि का व्यापक परिचय देना है।

उपलब्धि:

- हिन्दी भाषा के विविध रूपों का परिचय मिलेगा।
- विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिंदी और कार्यालयी हिंदी के विविध पक्षों का अध्ययन कर सकेंगे।
- व्यावसायिक हिंदी के उपयोग का अध्ययन भी इसमें सम्मिलित है।
- रोजगार प्राप्ति के योग्य बन सकेंगे।

इकाई 1	भाषा के विविध रूप : सामान्य हिन्दी, परिनिष्ठित हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी, राजभाषा हिन्दी, राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति
इकाई 2	प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध आयाम : कार्यालयी हिन्दी, जनसंचार की हिन्दी, वाणिज्य एवं विज्ञापन की हिन्दी, विज्ञान एवं कंप्यूटर की हिन्दी
इकाई 3	कार्यालयी हिन्दी अनुप्रयुक्ति क्षेत्र: पत्र लेखन एवं उसके प्रकार, प्रारूप लेखन, टिप्पण, प्रतिवेदन, संक्षेपणएवं पल्लवन, परिपत्र, सूचना, अधिसूचना, अनुस्मारक
इकाई 4	पारिभाषिक शब्दावली:आवश्यकता एवं स्वरूप, निर्माण के सिद्धांत एवं प्रक्रिया

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. हिन्दी व्याकरण-कामता प्रसाद गुरु, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी-डॉ. विजयपाल सिंह, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी- रवीन्द्र कुमार श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिद्धांत एवं प्रयोग- डॉ. दंगल झाल्टे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

तृतीय वर्ष -षष्ठ सत्र- तृतीय पत्र

(Major Paper)

HIN-352 **हिन्दी गद्य: विविध विधाएँ - 2** **क्रेडिट – 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र में गद्य की विविध विधाओं जैसे- जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्तांत, व्यंग्य लेखन, रिपोर्ताज एवं पत्र साहित्य का अध्ययन किया जाएगा।

उपलब्धि:

- इस अध्ययन से विद्यार्थीगण कथेतर लेखन-शैली से अवगत होंगे।
- वे कई लेखकीय व्यक्तित्त्व की विशेषताओं से परिचित होंगे।
- विभिन्न रचनाकारों की रचनाओं का बोध होगा।

इकाई 1 आत्मकथा : क्या भूलूँ क्या याद करूँ (हरिवंशराय बच्चन) प्रारम्भिक 50 पृष्ठ

इकाई 2 यात्रावृत्तांत : मेरी जर्मनी यात्रा (रामधारी सिंह दिनकर),मेरी बद्रीनाथ यात्रा (विष्णु प्रभाकर)

इकाई 3 व्यंग्य लेखन : एक मध्यवर्गीय कुत्ता, विकलांग श्रद्धा का दौर, वैष्णव की फिसलन (हरीशंकर परसाई)

इकाई 4 प्रहसन :अंधेर नगरी (भारतेन्दु हरिश्चंद्र)

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. गद्य की नयी विधाओं का विकास- मज़दा असाद, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हिंदी गद्य: विन्यास और विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिंदी का गद्य साहित्य- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. हिंदी के श्रेष्ठ रेखाचित्र- सं. डॉ. चौथीराम यादव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. छायावादोत्तर हिंदी गद्य साहित्य –विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. आधुनिक हिंदी गद्य का साहित्य- हरदयाल, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

तृतीय वर्ष - षष्ट सत्र-चतुर्थ पत्र

(Major Paper)

HIN-353 **पूर्वोत्तर भारत में हिंदी भाषा एवं साहित्य** **क्रेडिट- 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का मुख्य उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत में हिंदी भाषा की स्थिति एवं हिंदी भाषा में उपलब्ध साहित्य से विद्यार्थियों को अवगत कराना है।

उपलब्धि:

- इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को पूर्वोत्तर भारत में संपर्क भाषा हिंदी का ज्ञान प्राप्त होगा।
- शिक्षा के माध्यम की भाषा और विभिन्न संस्थाओं के रूप में हिंदी की स्थिति का ज्ञान होगा।
- पूर्वोत्तर की भाषाओँ के अनुवाद का ज्ञान होगा।
- यहाँ के हिंदी साहित्य का बोध विकसित होगा।

इकाई 1 पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की स्थिति : संपर्क भाषा के रूप में, शिक्षा के माध्यम के रूप में, विभिन्न संस्थाओं में हिंदी का अनुप्रयोग

इकाई 2 पूर्वोत्तर भारत में हिंदी पत्रकारिता : समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ (साहित्यिक और साहित्येतर) संचार माध्यमों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति (आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अन्य जन माध्यम)

इकाई 3 पूर्वोत्तर भारत का हिंदी साहित्य: मायावी कामरूप, कामाख्या क्षेत्रे गुवाहाटी नगरे (पाठ्यपुस्तक- ब्रह्मपुत्र के किनारे किनारे: सांवरमल सांगानेरिया, वाणी प्रकाशन)

इकाई 4 पूर्वोत्तर भारत का हिंदी में अनूदित साहित्य: क. गद्य साहित्य- सड़क की यात्रा (मामंग देई),सूर्यास्त (एच. इलियास), शिक्षक (सर बिदोर सिंह क्रो), जड़ें (नेचुरियाज़ो चुचा), मेरे मन मंदिर की स्वर्ण-दीपशिखा (एन. टी. लेपचा)

(पाठ्यपुस्तक- पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियाँ- संपा: रमणिका गुप्ता)

ख. कविता- गारो- जन्मभूमि के प्रति समर्पण, याद करूँगा मैं तुम्हें (हावर्ड डेनिसन मोमिन,कविता कोश), कॉकबरक-सूखे के बाद वर्षा, गरिया (नंदकुमार देबबर्मा, सुनिल देबबर्मा) आओ- खाली जगहें, मेरा अंतिम गीत (तेमसुला आओ) खासी- को लाउ किंताङ, शोषण (प्रो. स्ट्रीम्लेट ड्खार) असमिया- मैं अपने शवों को लेकर भाग गया, जीवन सच में कितना सुंदर हो सकता है (नीलिम कुमार, प्राणजित बोरा)

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. कॉकबरक की प्रतिनिधि कविताएँ- अनुवादक डॉ. मिलन रानी जमातिया, मानव प्रकाशन, कोलकाता
2. माँ के अनमोल रत्न- अनुवादक: जीन एस. ड्खार, सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
3. अद्यतन असमिया कविता-संचयन- अनुवादक- रूमी लश्कर बोरा, अनुवादक संपादन- देवेंद्र कुमार देवेश, विजया बुक्स, नई दिल्ली
4. हिंदी यात्रा साहित्य में भारत का पूर्वोत्तर- सुनील कुमार, बोधि प्रकाशन, जयपुर

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

चतुर्थ वर्ष - सप्तम सत्र - प्रथम पत्र

(Major Paper)

HIN - 400 **शोध प्रविधि** **क्रेडिट–4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य है विद्यार्थियों को शोध की विविध प्रविधियों से अवगत कराना है जिससे शोध-कार्य करते समय वे अत्यावश्यक नियमों का पालन कर सकें।

उपलब्धि:

- इसके अध्ययन से शोध का स्वरूप स्पष्ट हो सकेगा।
- विद्यार्थीगण शोध की विभिन्न प्रविधियों, प्रक्रिया तथा शोध नैतिकता के नियमों संबंधित ज्ञान भी प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में शोध की गुणवत्ता बढ़ेगी।

इकाई 1 शोध का स्वरूप : अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एवं भेद

इकाई 2 शोध की प्रविधि : आलोचनात्मक, समीक्षात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक

इकाई 3 शोध की प्रक्रिया : विषय चयन, सामग्री संकलन, रूपरेखा निर्माण,शोध-भाषा, पाद टिप्पणी एवं संदर्भ ग्रंथ सूची

इकाई 4 शोध नैतिकता : अर्थ एवं महत्त्व, बौद्धिक ईमानदारी, शोध दुराचरण (मिथ्यापन, पाठचौर्य, लेखकीय अवदान – अवमानना), प्रकाशन दुराचार

अभिस्तावित पुस्तकें–

1. अनुसंधान का स्वरूप –सं. सावित्री सिन्हा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. अनुसंधान की प्रक्रिया- सं. सावित्री सिन्हा, विजयेंद्र स्नातक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. अनुसंधान प्रविधि और क्षेत्र- राजमल बोरा, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., दरियागंज, दिल्ली
4. शोध प्रविधि और क्षेत्र - डॉ. विनय मोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
5. शोध एवं प्रकाशन नीतिशास्त्र – सुरेंद्र कटारिया, श्रीराम पाण्डेय, आर. बी. एस. ए. पब्लिशर्स
6. अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया- एस. एन. गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. शोध पद्धतियाँ- डॉ. बी. एल. फड़िया, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
8. शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि – बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

चतुर्थ वर्ष - सप्तम सत्र - द्वितीय पत्र

(Major Paper)

HIN-401 **हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्यकाल तक)** **क्रेडिट -4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के मध्यकाल तक के इतिहास का सम्यक ज्ञान देना है।

उपलब्धि :

- इसके अध्ययन से विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल का कालनिर्धारण, नामकरण, परिवेश का ज्ञान होगा।
- विभिन्न युगों की प्रवृत्तियों की जानकारी मिलेगी।
- प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं का परिचय मिलेगा।

इकाई 1 हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा, हिन्दी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण, आदिकाल की परिस्थितियां, आदिकालीन काव्य धाराएं

इकाई 2 भक्ति आन्दोलन : उद्भव एवं विकास; भक्तिकालीन परिस्थितियां; संतकाव्य: सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य; सूफीकाव्य : सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य

इकाई 3 कृष्णकाव्य :सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य; रामकाव्य : सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य

इकाई 4 रीतिकालीन परिस्थितियां, विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त), सामान्य परिचय एवं वैशिष्ट्य

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
2. हिंदी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, वाराणसी
3. हिंदी साहित्य : उद्भव एवं विकास – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, वाराणसी
4. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास- गणपति चंद गुप्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
5. हिंदी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. उत्तर भारत की संत परंपरा – परशुराम चतुर्वेदी, राजकमल प्रकाशन, वाराणसी
7. भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य – शिव कुमार मिश्र, राजकमल प्रकाशन, वाराणसी
8. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास– डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

चतुर्थ वर्ष - सप्तम सत्र - तृतीय पत्र

(Major Paper)

HIN-402	**भारतीय काव्यशास्त्र**	**क्रेडिट -4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र का सैद्धांतिक परिचय देना है। काव्यशास्त्र के सभी सम्प्रदायों, काव्य के उद्देश्यों का उन्हें ज्ञान होगा।

उपलब्धि:

- विभिन्न आचार्यों द्वारा भारतीय काव्यशास्त्र की संबंधी परिभाषाओं एवं उसके स्वरूप का स्पष्टीकरण मिल सकेगा।
- वर्तमान काव्य लेखन-प्रक्रिया में इसके महत्त्व को भी स्थापित किया जा सकेगा।
- काव्यलक्षण, प्रयोजन, हेतु, आदि का ज्ञान होगा।
- शब्दशक्ति का बोध होगा।

इकाई 1 काव्यशास्त्र की अवधारणा, भारतीय काव्यशास्त्र का परिचय, नामकरण, उत्पत्ति और विकास के विभिन्न चरण

इकाई 2 काव्य लक्षण एवं काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन

इकाई 3 शब्द शक्ति : अर्थ, अवधारणा, भेद एवं वर्गीकरण

इकाई 4 रस के भेद, प्रमुख अलंकार (श्लेष, अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति), छंद परिचय एवं प्रमुख छंद (दोहा, सोरठा, चौपाई, कवित्त,सवैया)

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. भारतीय काव्य चिंतन – डॉ. शोभाकांत मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना
2. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिंदी आलोचना का विकास- डॉ. नंद किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. काव्य के सिद्धांत और अध्ययन- गुलाबराय, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
5. भारतीय काव्यशास्त्र- बलदेव उपाध्याय, चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी
6. भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य-परंपरा- डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
7. भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी-आलोचना- डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

चतुर्थ वर्ष - सप्तम सत्र - चतुर्थ पत्र

(Major Paper)

HIN- 403 **हिंदी कथा साहित्य** **क्रेडिट – 4/अंक-100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी उपन्यास एवं कहानी के उद्भव और विकास की जानकारी देना है।

उपलब्धि:

- इसके अध्ययन से विद्यार्थियों को हिंदी उपन्यास एवं कहानी के उद्भव और विकास की जानकारी मिलेगी।
- हिंदी के प्रमुख कथाकारों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- चयनित उपन्यास एवं कहानियों के पठन-पाठन से विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास होगा।

इकाई 1 गबन – प्रेमचंद

इकाई 2 बाबा बटेसरनाथ - नागार्जुन

इकाई 3 कहानियाँ : एक टोकरीभर मिट्टी (माधवप्रसाद सप्रे), बूढ़ी काकी (प्रेमचंद),हार की जीत(सुदर्शन), तत्सत (जैनेद्र), हीलीबोन की बत्तखें (अज्ञेय)

इकाई 4 कहानियाँ :वापसी (उषा प्रियंवदा), जिंदगी और जोंक (अमरकांत), नन्हों (शिवप्रसाद सिंह) कोसी का घटवार (शेखर जोशी), सुख (काशीनाथ सिंह)

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. हिंदी का गद्य साहित्य- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. हिंदी साहित्य का नवीन इतिहास- लालसाहब सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ- सं पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. हिंदी गद्य रूप : सैद्धांतिक विवेचन – निर्मल देवी श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. हिंदी उपन्यास का इतिहास- डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा – डॉ. रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना- डॉ. चंद्रकांत बांदिबडेकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

चतुर्थ वर्ष -सप्तम सत्र - पंचम पत्र

(Minor Paper)

HIN- 404 **हिंदी कथा साहित्य** **क्रेडिट – 4/अंक-100**

उद्देश्य:

इस पत्र का लक्ष्य विद्यार्थियों को हिंदी उपन्यास एवं कहानी के उद्भव और विकास की जानकारी देना है। इसके साथ-साथ हिंदी के प्रमुख कथाकारों की जानकारी देना भी इसका उद्देश्य है।

उपलब्धि:

- विद्यार्थियों को हिंदी उपन्यास एवं कहानी के उद्भव और विकास की जानकारी मिलेगी।
- हिंदी के प्रमुख कथाकारों का ज्ञान प्राप्त होगा।
- चयनित उपन्यास एवं कहानियों के पठन-पाठन से विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास होगा।

इकाई 1 गबन – प्रेमचंद

इकाई 2 बाबा बटेसरनाथ - नागार्जुन

इकाई 3 कहानियाँ : एक टोकरीभर मिट्टी (माधवप्रसाद सप्रे), बूढ़ी काकी (प्रेमचंद),हार की जीत(सुदर्शन), तत्सत (जैनेंद्र), हीलीबोन की बत्तखें (अज्ञेय)

इकाई 4 कहानियाँ :वापसी (उषा प्रियंवदा), जिंदगी और जोंक (अमरकांत), नन्हों (शिवप्रसाद सिंह) कोसी का घटवार (शेखर जोशी), सुख (काशीनाथ सिंह)

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. हिंदी का गद्य साहित्य- रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. हिंदी साहित्य का नवीन इतिहास- लालसाहब सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ- सं पुरुषोत्तमदास मोदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. हिंदी गद्य रूप : सैद्धांतिक विवेचन – निर्मल देवी श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. हिंदी उपन्यास का इतिहास- डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा – डॉ. रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना- डॉ. चंद्रकांत बांदिबडेकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

चतुर्थ वर्ष - अष्टम सत्र - प्रथम पत्र

(Major Paper)

HIN- 450 **पाश्चात्य काव्यशास्त्र** **क्रेडिट – 4/अंक-100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को पाश्चात्य साहित्य चिंतन की सम्यक जानकारी देना है।

उपलब्धि:

- विद्यार्थीगण यूनानी, लैटिन, फ्रांसीसी, जर्मन साहित्य चिंतन का परिचय प्राप्त करेंगे।
- मार्क्सवादी विचारधारा, अभिजात्यवाद, तथा स्वच्छंदतावाद संबंधी ज्ञान भी प्राप्त कर सकेंगे।
- विभिन्न विमर्शों का अध्ययन करेंगे।

इकाई 1 प्राचीन पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय चिंतन : यूनानी काव्य चिंतन, लैटिन काव्यशास्त्रीय चिंतन

इकाई 2 मध्यकालीन पाश्चात्य कला-साहित्य चिंतन: फ्रांसीसी साहित्य चिंतन, जर्मन कला साहित्य चिंतन

इकाई 3 आधुनिक कला - साहित्य चिंतन: मार्क्सवादी कला-साहित्य चिंतन, आभिजात्य कला- साहित्य चिंतन

इकाई 4 स्वच्छंदतावाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- देवेंद्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
3. पाश्चात्य साहित्य-चिंतन- डॉ. निर्मला जैन और कुसुम बाठिया, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. पाश्चात्य काव्य-चिंतन- करुणाशंकर उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5. पाश्चात्य काव्य शास्त्र अधुनातन संदर्भ- सत्यदेव मिश्र, आनंद प्रकाशन, कानपुर
6. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन- डॉ. सत्यदेव चौधरी और डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त, अशोक प्रकाशन, दिल्ली
7. भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिंदी-आलोचना- डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र- डॉ. अर्चना श्रीवास्तव,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

चतुर्थ वर्ष -अष्टम सत्र - द्वितीय पत्र

(Minor Paper)

HIN-451 **आधुनिक हिंदी कविता** **क्रेडिट – 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों को आधुनिक काल के आरंभ से लेकर छायावाद तक के कवियों की कविताओं का ज्ञान प्राप्त हो।

उपलब्धि:

- इस पत्र के अध्ययन करने से विद्यार्थियों को आधुनिक काल के प्रतिनिधि कवियों की कविताओं का रसास्वादन करने का अवसर मिलेगा।
- कविताओं में निहित भावनाओं एवं काव्य-लेखन-शैली का ज्ञान प्राप्त होगा।
- नयी काव्य-भाषा का बोध प्राप्त होगा।

इकाई 1 भारतेंदु हरिश्चंद्र (सवैया संख्या – 3, 6, 8, 11, 15); मैथिलीशरण गुप्त (यशोधरा – संख्या 1 और 2)

इकाई 2 जयशंकर प्रसाद (आँसू प्रारंभिक 15 छंद); सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (जागो फिर एक बार, वह तोड़ती पत्थर)

इकाई 3 सुमित्रानंदन पंत (नौका विहार, भारत माता); महादेवी वर्मा (मैं नीर भरी दुख की बदली, मधुर-मधुर मेरे दीपक जल)

इकाई 4 हरिवंशराय बच्चन (चोटी की तरफ, अग्निपथ); रामधारी सिंह दिनकर (वन-फूलों की ओर , मनुज का श्रेय)

पाठ्यपुस्तक - 1 – काव्य-सुधा – संपादक – मंजु ज्योत्स्ना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2– आँसू – जयशंकर प्रसाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. भारतेंदु: एक नयी दृष्टि – लहरी राम मीणा, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली
2. जयशंकर प्रसाद- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. प्रसाद, पंत और मैथिलीशरण गुप्त- रामधारी सिंह 'दिनकर', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. महादेवी- डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, श्री विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा
6. आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख प्रस्थान बिंदु- डॉ. मुकेश कुमार मिश्र, वान्या पब्लिकेशन,दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)

चतुर्थ वर्ष - अष्टम सत्र

HIN-452*	**परियोजना कार्य**	**क्रेडिट -12/ अंक- 300**

निर्देश: जो विद्यार्थी सप्तम सत्र तक समग्रत: 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेंगे उन्हें ही परियोजना कार्य हेतु अर्हता प्राप्त होगी। परियोजना कार्य न करने वाले विद्यार्थियों को निम्नलिखित तीन पत्रों (HIN-453, HIN-454 एवं HIN-455) का अध्ययन करना होगा।

चतुर्थ वर्ष - अष्टम सत्र - तृतीय पत्र

(Major/Advance Course)

HIN-453* **आधुनिक भारतीय साहित्य** **क्रेडिट- 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र में भारत की प्रमुख भाषाओँ में लिखित आधुनिक साहित्य के विविध रूपों का अध्ययन किया जाएगा।

उपलब्धि:

- विद्यार्थियों को आधुनिक भारतीय की अवधारणा समझाने में सहायता मिलेगी।
- भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियाँ, अध्ययन की समस्याएँ, तुलनात्मक अध्ययन का ज्ञान प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों को आधुनिक युग में रचित भारतीय साहित्य की जानकारी प्राप्त हो।
- भारतीय भाषाओं की रचनाओं के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी।

इकाई 1 आधुनिक भारतीय साहित्य की अवधारणा, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, अध्ययन की समस्याएँ एवं तुलनात्मक अध्ययन

इकाई 2 कविता: निर्झर का स्वप्नभंग (रवींद्रनाथ ठाकुर), आईना (भूपेन हजारिका), न्याय (बिष्णु महापात्र), कुदरती सोता (सुकीर्थ रानी), एक बार फिर (निर्मला पुतुल)

इकाई 3 कहानी: विशेष पुरस्कार (असमिया), सेप्टोपस की भूख (बंगाली), अदल-बदल (गुजराती), टिकट-अलबम (तमिल), किफायत (तेलुगु)

इकाई 4 उपन्यास: अछूत (दया पवार)
पाठ्यपुस्तक : तेरह अनुपम कहानियाँ- मिकी पटेल, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

अभिस्तावित पुस्तकें-

1. भारतीय साहित्य – डॉ. नगेंद्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. भारतीय साहित्य- डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन- डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. भारतीय साहित्य- संकलनकर्ता- डॉ. आर. आई. शांति, डॉ. प्रकाश ए., वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. भारतीय भाषाओं के साहित्य का संक्षिप्त इतिहास- केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली
6. भारतीय साहित्य का बहु-धरातलीय सर्वेक्षण- इंद्र नाथ चौधुरी, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन,नई दिल्ली
7. आधुनिक भारतीय साहित्य- सं.-डॉ. राजेंद्र मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100,सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा-25)

चतुर्थ वर्ष -अष्टम सत्र- चतुर्थ पत्र

(Major/Advance Course)

HIN-454* **हिंदी साहित्य की वैचारिकी** **क्रेडिट- 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

इस पत्र के माध्यम से हिंदी साहित्य–लेखन में अभिव्यक्त वैचारिक वैविध्य का अध्ययन किया जायेगा ।विभिन्न दर्शनी अवधारणाओं का भी उन्हें बोध होगा ।

उपलब्धि:

- विद्यार्थीगण हिंदी साहित्य में उत्तरोत्तर विकसित होने वाली विचारधाराओं से लाभान्वित होंगे ।
- प्राचीन विचारधाराओं का ज्ञान होगा ।
- आधुनिक चिंतन का ज्ञान होगा ।

इकाई 1 आदिकालीन हिंदी साहित्य का वैचारिक वैविध्य : सिद्ध, नाथ और जैन

इकाई 2 भक्तिकालीन हिंदी साहित्य की विचारधारा :निर्गुण एवं सगुण

इकाई 3 आधुनिक हिंदी साहित्य की विचारधारा :गांधीवाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद

इकाई 4 स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श एवं उत्तर-आधुनिकता

अभिस्तावित पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का आदिकाल- आचार्य हजारी प्रदास द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
2. साहित्य का इतिहास दर्शन- नलिन विलोचन शर्मा, किताब घर प्रकाशन,नई दिल्ली
3. आदिकालीन हिंदी साहित्य: अध्ययन की दिशाएँ- सं. अनिल राय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास- बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. स्त्री विमर्श: विविध पहलू- कल्पना वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. स्त्री-विमर्श की सैद्धांतिकी: तुम से मैं की ओर- पूनम कुमारी, मेधा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
7. दलित-विमर्श और हिंदी साहित्य- सं. दीपक कुमार पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा - 25)

चतुर्थ वर्ष - अष्टम सत्र - पंचम पत्र

(Major/Advance Course)

HIN-455* **अनुवाद: सिद्धान्त एवं व्यवहार** **क्रेडिट- 4/ अंक- 100**

उद्देश्य:

यह पत्र मूलतः रोजगारपरक हिंदी को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है जिसमें अनुवाद की दक्षता को विकसित करना मुख्य लक्ष्य है।

उपलब्धि:

- विद्यार्थियों में अनुवाद से संबंधित विभिन्न पक्षों का बोध विकसित होगा।
- विभिन्न भाषाओँ में पारस्परिक अनुवाद की गुणवत्ता का ज्ञान होगा।
- वर्तमान समय में भाषा एवं साहित्य के विस्तार एवं विकास के लिए अनुवाद की अनिवार्य भूमिका निर्धारित होगी।

इकाई 1 अनुवाद: परिभाषा, प्रकार, विशेषताएँ, सीमाएँ एवं महत्त्व

इकाई 2 अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि: अनुवाद प्रक्रिया के विविध चरण, स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा, अनुवाद प्रक्रिया की प्रकृति, अनुवाद की प्रविधि

इकाई 3 अनुवाद की समस्याएँ: साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, कार्यालयी अनुवाद, विधि एवं वाणिज्यिक अनुवाद

इकाई 4 (i) हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद
(ii) अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद

अभिस्तावित पुस्तकें:

1. अनुवाद और अनुप्रयोग- दिनेश चमोला, अदिश प्रकाशन, देहरादून
2. अनुवाद कला: सिद्धान्त और प्रयोग- कैलाश चन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
3. अनुवाद निरूपण- भारती गोरे, विकास प्रकाशन, कानपुर
4. अनुवाद के विविध आयाम- पूरनचंद टण्डन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
5. अनुवादविज्ञान- भोलानाथ तिवारी, शब्दाकार प्रकाशन, दिल्ली
6. अनुवाद साधना- पूरनचन्द टण्डन, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली

अंक विभाजन: पूर्णांक 100 (सत्रांत परीक्षा - 75 और आभ्यंतर परीक्षा- 25)